महानिदेशक महोदय का संबोधन भााण

11वाँ अंतर्राट्रीय एन.बी.डी.सी. सेमिनार11- 09 : फरवरी, 2011

मेजर जनरल पी.एस.पॉल, महानिरीक्षक, (प्रशिक्षण केंद्र), मेजर जनरल आर.एस.प्रधान, महानिरीक्षक (प्रचालन), डाँ. आर.पी.शर्मा, महानिरीक्षक (मुख्यालय), विदेशों से पधारे हमारे माननीय अतिथिगण, सुरक्षा बलों तथा अन्य संगठनों से आए प्रतिनिधियों, राट्रीय सुरक्षा गारद के अधिकारियों, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीड़िया के सदस्यों तथा देवियो और सज्जनो-- आप सभी को मेरा सादर नमस्कार !

एन.एस.जी. में रहते हुए यह हमारा सौभाग्य है कि आज हमारे साथ प्र ामुख व्यावसायिक, विचारधारक, बुद्धिमान तथा सुरक्षा के क्षेत्र में व्यापक विशे- ाज्ञता रखने वाले प्रतिनिधि मौजूद हैं । मैं एन.एस.जी. में आप सभी का स्वागत करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि मानेसर स्थित हमारे गैरीसन के सुन्दर वाता वरण में आपका रहन-सहन तथा इस सेमिनार में प्रतिभागिता काफी आनंदमयी और लाभकारी रहेगी । वक्ताओं तथा प्रतिनिधियों के प्रतिभागी स्तर को देखते हुए मुझे पूरा विश्वास है कि आपको अगले तीन दिनों के दौरान बुद्धिमता प्रेरक तथा व्यावसायिक दर्जे का संतुटिदायक अनुभव हासिल होगा ।

देवियों और सज्जनों, यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वर्तमान में हम असाधारण तौर पर कठिन समय में रह रहे हैं जिसमें अंधाधुँध हिंसा तथा संपत्ति के अनदेखे विनाश का बोलबाला है । आतंकवाद एक ऐसी हरकत है जो काफी व्यापक रूप लेती जा रही है तथा हमारे जीवन में एक प्रमुख घटना बन गई है । प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में यह सरकार की विदेश नीतियों तथा व्यावसायिक जगत की व्यापार विधियों के तौर-तरीकों को प्रभावित कर रही है । हमारे नेताओं, प्रमुख प्रतिठनों, नागरिकों तथा यहाँ तक कि हमारी शासन प्र णाली की सुरक्षा हेतु आतंकवाद से लड़ने के लिए हमें काफी बड़ी मात्रा में धन एवं समय बर्बाद करना पड़ रहा है । यह हमारे यातायात के तौर -तरीकों, यहाँ तक कि हमारे दैनिक जीवन को भी प्रभावित कर रहा है । हमारे समाचार पत्र, रेडियो तथा टेलीविजन प्रत्येक घंटे में हमारे सामने आतंकवादियों द्वारा की गई अंधाधुँध हिंसा की विकृत एवं घिनौनी तस्वीर पेश करते रहते हैं । टेलीविजन ए वं अखबारों के माध्यम से ये आतंकवादी वीभत्स एवं अनुचित मांग करते हैं ।

देवियो और सज्जनो, आतंकवाद कोई नई बात नहीं है बल्कि यह उतना ही पुराना है जितनी की हमारी सभ्यता है जो समय के साथ-साथ बढ़ता रहा है । यहाँ तक कि इसने अपने कुछ ऐतिहासिक लक्षणों को वर्तमान तक बनाए रखा है सिवाय इसके कि अब प्रौद्योगिकी ने व्यापक विनाशकारी घातक उपकरणों के निर्माण तथा यातायात और संचार के आधुनिक साधनों की उपलब्धता को सुल भ बना दिया है जिससे आतंकवादी वैश्विक स्तर पर अपनी इच्छानुसार किसी भी स्थान पर हमला कर सकते हैं । यद्यपि आतंकवाद की निश्चित उत्पत्ति का

पता लगाया जाना असंभव है परंतु अनुमान है कि इसकी शुरूआत लगभग 2000 र्वा पूर्व हुई थी । प्राचीन समय से ही धार्मिक विवेचनाओं तथा जान बूझकर फैलायी गई राजनैतिक एवं आर्थिक असमानता की वजह से आतंकवाद को प्रोत्साहन मिलता रहा है । आज के आतंवादियों की तरह से ही ये समूह भी अपने कृत्यों के माध्यम से राजनैतिक संदेश देने का कार्य करते थे तथा अपनी मौत को बलिदान तथा स्वर्ग का रास्ता बताते थे ।

9/11 के हमले की प्रतिध्वनि के मंद पड़ने से पहले ही आतंकवादियों ने भारत की वित्तीय राजधानी मुंबई पर हमला कर दिया । 26/11 का आतंकवादी हमला आतंकवादी संगठनों की रणनीति में आमूलचूल परिवर्तन को दर्शाता है । यह आतंकवादी घटना एक पूर्ण तौर पर अभ्यास किया गया बहुभागी आतंक वादी हमला था जिसमें घातक हथियारों, कार-जैंकिंग, ड्राइव-बाई शूटिंग, पूर्व निर्मित आईईडी का प्रयोग किया गया और लक्ष्य बनाकर हत्याऐं की गई तथा लोगों को बंधक बनाया गया । आतंकवादियों ने दस हमलावरों को समुद्री मार्ग से भेजकर एक सुनियोजित हमला करके सभी को हैरान कर दिया । मुंबई में हु आ 26/11 का आतंकवादी हमला अपने दुस्साहस, ऑपरेशनल उद्देश्यों, क्रियान्वयन की जटिलता तथा लक्ष्यों की विविधता की दृटि से चौंका देने वाला है । यह प्रदर्शित करता है कि आतंकवादी संगठन एक कार्य श्रृंखला बना चुके हैं तथा रणनीति बनाकर हमला करने की क्षमता तथा योजना हासिल कर चुके हैं । यह इस बात का भी द्योतक है कि ये हमले अंतर्राट्रीय सीमाओं को पार कर चुके हैं तथा इनमें आधुनिक प्रौद्योगिकी और संचार उपकरणों का भरपूर

इस्तेमाल हो रहा है। डेविड कोलमैन हेडली तथा तव्वहुर राणा की गिरफ्तारी यह दर्शाती है कि आतंकवादी संगठन न केवल लॉजिस्टिक के मामले में ही बल्कि ऑपरेशनल योजनाओं में भी विकेंद्रीकृत हो रहे हैं। यह दाँव-पेंच आतंकी हमले के उद्गम स्थल को धुँधला करने तथा सरकार के सुरक्षा तंत्र को धोखा देने के लक्ष्य से परिपूर्ण हैं जिसमें योजनाकर्त्ताओं द्वारा लक्षित विकल्पों के सर्वेक्षण तथा स्थानीय सहायता नेटवर्कों की पूर्व तैनाती, हथियार एवं गोला बारूद तथा ि वस्फोटकों के गुप्त भण्डार और संभवतः गुपचुप तरीके से तैयार की गई संचार-प्रणाली जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।

आतंकवादी अपनी कार्यविधियों मे निरंतर बदलाव कर रहे हैं। वे आई. ई. डी. केंद्रित हमलों के अलावा आग्नेयशास्त्रों का भी भरपूर इस्तेमाल कर रहे हैं। इक्कीसवीं शताब्दी में आतंकवाद को एक प्रमुख युद्ध कार्यविधि के तौर पर इस्तेमाल होते देखा जा सकता है अतः यह राजनीतिक, आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे तीव्र विकास के साथ ही साथ बढ़ता जा रहा है। आतंकवादी संगठन इन बदलावों को अपनी प्रचालन विधियों, धर्नाजन उपायों तथा नयी क्षमताओं के लिए प्रयोग कर रहे हैं। पिछले दशक के दौरान हुई घटनाऐं स्पट तौर पर संकेत करती हैं कि एक स्वतंत्र एवं सभ्य समाज को आतंकवाद से निपटने के लिए एकमत होने तथा इसके विरूद्ध रणनीति तैयार करने के लिए एकजुट होने की आवश्यकता है। एक लघुदर्शी तथा विखंडित दृटिकोण से वांछित परिणाम हासिल नहीं होंगे। इसके लिए एक बहुआयामी, समन्वित तथा

आसूचना आधारित पद्धति विकसित किए जाने की आवश्यकता है ताकि आतंकवादियों द्वारा उत्पन्न खतरे से निपटा जा सके ।

भविय में होने वाले हमले तुलनात्मक दृटि से लघु स्तरीय तथा अवसर वादी और कम तैयारी एवं प्रशिक्षण के साथ किए जाने वाले हो सकते हैं । असफल हमले भी उनके विनाशक प्रभाव, सुभेदता के प्रदर्शन तथा आम जन में भय एवं अनिश्चितता पैदा करने की वजह से सफल हमलों के तौर पर प्रदर्शित किए जा सकते हैं । इस प्रकार संभावित विधियों का ताना-बाना तथा हमलों का स्तर व्यापक हुआ है जो विस्तारपूर्वक नियोजन किए गए व्यापक विनाशकारी हमलों के साथ-साथ लघु आतंकवाद को भी सम्मिलित कर रहा है । जिसमें वैयक्तिक स्तर पर किए जाने वाले प्रभावी स्थानीय कार्य, आतंकवादी गुटों द्वारा इंटरनेट के माध्यम से प्रचार किया जाना शामिल है । हम आतंकवादी हमलों में अनुकूलन, विकेंद्रीकरण तथा फैलाव देख रहे हैं तथा ये स्थानीय लोगों की सहायता एवं "स्लीपर सैल" के माध्यम से विभिन्न समुदायों में पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं ।

मध्य-पूर्व में चल रही राजनैतिक उथल-पुथल, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान में जारी अंदरूनी भिड़ंत तथा इस प्रकार की अन्य गतिविधियाँ दर्शाती हैं कि आतंकवाद को राजनैतिक या अन्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निजी हितों के लिए प्रयोग किया जा सकता है । महत्वपूर्ण बात यह है कि इन स्थानीय घटनाओं के प्रभाव विश्वव्यापी होते हैं तथा इस प्रकार भौगौलिक दृटि से दूर स्थित

किसी एक विशो स्थल पर आतंकवादियों द्वारा की जाने वाली घटना की अनदेखी नहीं की जा सकती ।

पूर्व सोवियत संघ के विघटन के साथ इस बात की प्रबल संभावना थी कि पूर्व सोवियत संघ आयुधशाला से वैपन-ग्रेड प्लूटोनियम को बिक्री के लिए रखा जा सकता है । बाद में, 1994 की बसंत ऋतु के दौरान जर्मन पुलिस ने तस्करी की गई नाभिकीय सामग्री जिसे संभवतः एटम बम के निर्माण के लिए प्रयोग किया जाता, को बेचे जाने के चार प्रयासों का पता लगाया । उसी वर्ा अगस्त माह में मास्को से म्यूनिख जाने वाली लुफ्थांसा फ्लाइट में एक लेड-लाइनिंग वाले सूटकेस में 350 ग्राम परमाणु ईंधन पाया गया । यद्यपि प्राप्त की गई सामग्री एक लघु, क्रूड एटम बम बनाए जाने के लिए भी पर्याप्त नहीं थी लेकिन वेपन-ग्रेड प्लूटोनियम बिक्री के लिए होने संबंधी तथ्य ने विश्व स्तर पर सुरक्षा एजेंसियों तथा आतंकवाद विशोज्ञों और अनुसंधान संस्थानों को चौंकाने का कार्य किया ।

इन तात्कालिक नाभिकीय उपकरणों के खतरे के अलावा उन्नत हथियारों एवं प्रौद्योगिकियों के प्रसारण की वजह से आतंकवादियों और अंतर्राट्रीय आपराधिक संगठ्नों को व्यापक स्तर पर नुकसान पहुँचाने की विधियाँ उपलब्ध होने का खतरा उत्पन्न हुआ ।

वर्ा 1995 में टोक्यो सब-वे में हुए सरीन गैस हमले ने विश्व को सी बी आर एन कारक की आतंक के औजार के रूप में ताकत का एहसास कराया । यद्यपि इस हमले की योजना और इसका कार्यान्वयन 9/11 को हुए आतंकी हमले की तुलना में अधिक साधारण था लेकिन इसके परिणाम समान रूप से गं भीर थे । संभवतः प्रौद्योगिकीय, लॉजिस्टिकल, ऑपरेशनल तथा वैचारिक बाध्यताओं ने यह सुनिश्चित किया कि इस प्रकार के हमलों की पुनरावृत्ति नहीं हो पाई लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है कि ये भविय में भी नहीं होंगे । विौले औद्योगिक रसायन तथा जैवीय कारक भी एक बहुत बड़ा खतरा हैं तथा इनका प्र ायोग भी विनाशकारी औजार के रूप में किया जा सकता है । उदाहरण के तौर पर किसी रिफाइनरी या केमिकल प्लांट में सुनियोजित तरीके से रखे गए ि वस्फोटकों को लीक करके एक विौली गैस से आक्रमण किया जा सकता है । इस प्रकार की कार्यवाही का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है । यदि हम पिछली शताब्दी के दौरान हुई कुछ औद्योगिक दुर्घटनाओं, जिनमें जान-माल का काफी नुकसान हुआ, पर नजर डालें तो इसका अंदाजा लगा सकते हैं । अतः हमारे द्वारा सी. बी. आर. एन. कारकों तथा विौले औद्योगिक रसायनों द्वारा उत्पन्न किए जाने वाले खतरों का विश्लोण किए जाने तथा इस प्रकार के खतरों से स्वयं को बचाने, इनका प्रबंधन तथा उपशमन किए जाने की आ वश्यकता है । इसके साथ ही आतंकी मशीनरी को निक्रिय करने तथा आतंक वादियों द्वारा निजी स्वार्थों के लिए प्रयोग किए जाने वाले कारणों के निराकरण के उद्देश्य से राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के सृजन के लिए प्रयास किए जाने की आवश्यकता है ।

देवियों और सज्जनों, इस पृठभूमि को ध्यान में रखते हुए हमें आतंकवाद के विरूद्ध हमारी लड़ाई में सम्मिलित मुद्दों पर आमतौर से तथा आई. ई. डी. और सी. बी. आर. एन. के खतरों के उपशमन के बारे में विशो तौर पर विचार-विमर्श करना चाहिए । चूँकि आज का विचार-विमर्श ही कल का उदाहरण होगा । मुझे पूरा विश्वास है कि यह विचार-विमर्श नई संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करेगा, भविय में अनुसंधान के लिए नए विचार प्रकट करेगा तथा कुछ संबंधित मुद्दों पर नया परिप्रेक्ष्य विकसित करेगा और हमें आतंक रूपी गुत्थी सुलझाने में मदद करेगा । मैं आप सभी के लिए आगामी तीन दिनों के दौरान एक अति प्रेरक एवं रोचक विचार-विमर्श की कामना करता हूँ ।

धन्यवाद !

जय हिन्द !

–